Subject:- Sociology Date:- 26/04/2020
Class:- D-I (H) Paper:- I^st & Subsidiary
Topic : सामाजिक परिवर्तन के चक्रिय सिद्धान्त
By : Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari college, Darbhanga, 9507941619

सामाजिक परिवर्तन के चक्रिय सिद्धान्त online study material No:- (52)

सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित सिद्धान्तों में चक्रिय सिद्धांत एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार सामाजिक परिवर्तन के चक्र चलते रहता है और हम जहाँ से प्रारंभ होते हैं फिर घूम-फिर कर वहीं पहुँच जाते हैं। जिस तरह एक शिशु का जन्म होता है, धीरे-धीरे वह व्यस्क होता है और फिर वृद्धा वस्था प्राप्त करने के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है उसी तरह एक सभ्यता और संस्कृति उत्पन्न होती है धीरे-धीरे उसका विकास होता है। और फिर उसका पतन भी होता है और एक समय आता है कि वे समाप्त भी हो जाती है। पुनः एक दुसरी सभ्यता व संस्कृति उत्पन्न हो जाता है और उसका भी क्रम चलने लगता है। यही चक्रिय सिद्धांत का सारतत्व है। इसे चित्रानुसार भी समझाजा सकता है :-

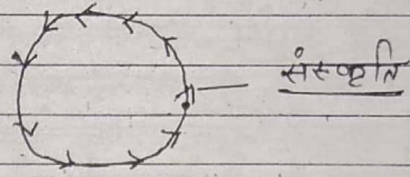

इस सिद्धांत के प्रवर्तक व समर्थक में oswald spengler, A.J. Toynbee, vilfredo Pareto, Chapin तथा P.A. Sorokin का नाम उल्लेखनीय रूप से माना गया है।

सामाजिक परिवर्तन के चक्रिय सिद्धांत का वर्णन के लिए कुछ विद्वानों के सिद्धांतों पर प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है जो इस प्रकार से है:-

(1) Spengler का सिद्धांत → इन्होंने अपनी पुस्तक 'the Decline of the West' में चक्रिय सिद्धांत को प्रस्तुत किया है। इनके अनुसार मानव शरीर की भाँति ही सभ्यता और संस्कृति भी उत्थान और पतन के चक्र से गुजरती है। इन्होंने पश्चिमी सभ्यता के सम्बन्ध में यह घोषणा किए थे कि पश्चिमी सभ्यता का काफी विकास हुआ है। इसलिए इसका शीघ्र ही पतन होगा। Spengler ने इसके पतन के कारणों का भी उल्लेख किया है। इनके अनुसार नगरों का अधिक विकास तथा युद्ध सभ्यता और संस्कृति के पतन के प्रमुख कारण है।

आलोचना → आलोचकों का मानना है कि Spengler ने सभ्यता एवं संस्कृति की तुलना एक सावयव से किए, जिसे आज कोई भी विद्वान स्वीकार नहीं करता है।

Scanned with CamScanner

दूसरी बात यह है कि Spengler ने भी यह नहीं बताया कि किसी सभ्यता और संस्कृति के विकास का अन्तिम बिन्दु कौन सा है जिसके बाद उसका पतन प्रारंभ होगा। पश्चिमी समाज का आज भी विकास हो रहा है या पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति आज भी विकसित हो रही है।

(2) A. J. Toynbee → इन्होंने अपनी पुस्तक 'A Study of History' में सामाजिक परिवर्तन के चक्रिय सिद्धांत को प्रस्तुत किया है। इन्होंने 21 सभ्यताओं का अध्ययन करने के पश्चात् अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया था। इनका सिद्धांत 'चुनौती एवं प्रत्युत्तर' का सिद्धांत (Theory of Challenge & Response) के नाम से जाना जाता है। इनके अनुसार प्रत्येक सभ्यता के प्रारंभ में प्रकृति एवं मानव द्वारा चुनौती दी जाती है। इस चुनौति का सामना करने के लिए अपने आप को अनुकूलन करना पड़ता है। अर्थात् प्रकृति मानव के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं, और जो उस चुनौति का सामना करने में सफल होता है वही इस लोक के सही रूप में रहने लायक होता है। और जो अपने आपको अनुकूलन नहीं कर पाता है वे काल के गाल में समा जाता है।

आलोचना → Toynbee Spengler के अपेक्षा अधिक आशावादी हैं, फिर भी कुछ रूपों से यह दोषपूर्ण है। क्योंकी आलोचकों का मानना है कि इनका (Spengler) का सिद्धांत दार्शनिक सिद्धांत है न की वैज्ञानिकता।

(3) Vilfredo Pareto → इन्होंने भी सामाजिक परिवर्तन का चक्रिय सिद्धांत को प्रस्तुत किया है। जो 'अभिजात वर्ग का परिभ्रमण' का सिद्धांत (Theory of circulation of elites) के नाम से जाना जाता है। इनके अनुसार समाज में दो वर्ग पाए जाते हैं। ये दो वर्ग — (1) अभिजात वर्ग (The class of elites) (2) अनभिजात वर्ग (The Class of non elites) अभिजात वर्ग में वे लोग सम्मिलित किए जाते हैं जो समाज का संचालन करते हैं और जिनके हाथ में सत्ता रहती है। इनके लोग प्रखर बुद्धि साहसी और नयी-नयी खोज करने वाले भी होते हैं। जो जोखिम भरा कार्य करने में हिचक का अनुभव नहीं करते हैं।

अनभिजात वर्ग में इन गुणों का अभाव रहता है। पैरेटो ने अपने सिद्धांत में कहा है कि 'elite class' के लोगों की संख्या समाज में कम रहती है किंतु अल्प संख्यक रहने के बावजूद भी वे अपनी व्यक्तिगत योग्यता और क्षमता तथा संगठनात्मक गुणों के कारण बहुसंख्यक पर शासन करते हैं। इन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि कोई भी वर्ग स्थिर नहीं रहता। एक वर्ग से दूसरे वर्ग में आने-जाने की प्रक्रिया सदैव

चलती रहती है। किंतु इस परिभ्रमण की प्रक्रिया प्रत्येक समाज में एक समान नहीं रहती है। इसी तरह एक समाज विशेष में भी विभिन्न समयों में इसकी तीव्रता भिन्न-भिन्न होती है। किंतु प्रत्येक समाज में और प्रत्येक समय अभिजात वर्ग के परिभ्रमण की प्रक्रिया विद्यमान रहती है। पैरेटो ने अपने अभिजात वर्ग के सिद्धांत में इस बात का भी उल्लेख किया है कि परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ-साथ अभिजात वर्ग का प्रभुत्व घटने लगता है और निम्न वर्ग या अभिजात वर्ग का प्रभुत्व धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। फलस्वरूप पुराना अभिजात वर्ग धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है और एक नया अभिजात वर्ग उत्पन्न होता है और उस नए अभिजात वर्ग के हाथ में शासन की बागडोर आ जाती है। अभिजात वर्ग के लोग अपनी योग्यता और क्षमता में ह्रास के कारण अनभिजात वर्ग में चले आते हैं। इसी तरह अनभिजात वर्ग में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपनी योग्यता और क्षमता में वृद्धि लाकर अभिजात वर्ग में चले जाते हैं। इस दोनों की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है इसे ही पैरेटो ने अभिजात वर्ग के परिभ्रमण का सिद्धांत कहा है। अतः इनके अनुसार "इतिहास एक कुलीनतंत्र का कब्रिस्तान है।"

आलोचना

पैरेटो के अभिजात वर्ग के परिभ्रमण के सिद्धांत के कुछ दोष निम्न हैं:

(1) पैरेटो का कुलीनतंत्र का कब्रिस्तान के रूप में इतिहास की व्याख्या उचित नहीं प्रतीत होती है। उन्होंने कुलीनतंत्र के उत्थान और पतन के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या प्रस्तुत की है जिसे एक बहुत साधारण व्याख्या कहा जा सकता है।

(2) पैरेटो के अनुसार जब निम्न वर्ग के लोग उच्च वर्ग के में आने का प्रयास करें तो उन्हें कुचल देना चाहिए, उचित नहीं प्रतीत होता है। आज कोई भी राष्ट्र आम जनता को कुचल देना नहीं चाहता है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U

Scanned with CamScanner